समाचार

दो माह तक नहीं देखी रात

Jan 01, 05:30 am

Print

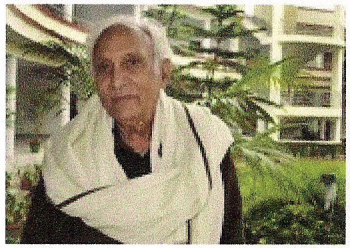

वाराणसी : यूं तो लोगों से मुलाकातों का सिलसिला रोज ही चला करता है लेकिन जब मुलाकात में रोमांच की अनुभूति हो तब सामने वाले के साथ घंटों बिताना 'पल' सा लगता है। जैसे ही पता चला कि शहर में अंटार्कटिका यानी दक्षिणी ध्रुव पर जाने वाले पहले भारतीय आएं हैं, मन रोमांचित हुआ और उनके अनुभव जानने जा पहुचा। काशी हिंदू विश्वविद्यालय के आईटी गेस्ट हाउस में गिरराज सिंह सिरोही (इनके नाम से दक्षिणी ध्रुव पर 'सिरोही प्वाइंट' भी जाना जाता है) रविवार की सुबह 11 नंबर कमरे में अलमस्त अंदाज में बैठे थे। चूंकि पहले से मुलाकात की जानकारी थी लिहाजा बात शुरू हो, इससे पहले ही वह बोल पड़े 'वहां तो दो महीने तक रात के दर्शन ही नहीं हुए थे।' जाने का उद्देश्य, पौधों में जैविक घड़ी (बायोलॉजिकल क्लाक) के प्रति वैज्ञानिक धारणाओं की पुष्टि करना। कुछ वैज्ञानिकों का मानना था कि यह क्लाक बाह्य वातावरण से प्रभावित होती है जबकि कुछ का मत था कि आंतरिक है। परीक्षण के लिए नवंबर 1960 से मार्च 1961 तक अंटार्कटिका में रहा। अनुसंधानों से साबित हुआ कि पौधों में जैविक घड़ी आंतरिक कारणों से प्रभावित होती है। किन -किन चीजों पर किया शोध, बोले- सोयाबीन के पौधे, फंगस (न्यूरो स्पोरा नोटाटा), चूहे के आकार का जीव जिसे हेमस्टर के नाम से जाना जाता है और काक्रोच। अनुसंधानों से इतर वहां के कुछ रामांचकारी अनुभव, बोले वर्ष 1961 का नया वर्ष वहां ही मनाया था, बिलकुल अपने ही अंदाज में। लकड़ी लेकर बर्फ पर चलना, बर्फ की आंधियों से बचने के लिए लेटते हुए निकलना, बर्फ के नीचे ही कृत्रिम रात बनाकर सोना। फिर मुस्कुराए और लगभग ठहाका लगाते हुए बोले उन दिनों संचार की इतनी सुविधा नहीं थी लिहाजा जब लौटने को हुए तो पता चला कि बर्फ पर बना एअरपोर्ट टुकड़े-टुकड़े हो चुका था। उस समय सन्न रह गया था पर आज जरूर हंसी आती है, उन यादों को सोचकर। दुरुस्त होने में कई दिन लग गए तब वापस लौट पाये। कृषि विज्ञान संस्थान (बीएचयू) से ही एमएससी (वर्ष 1947 से 1949 तक) करने वाले सिरोही पादप कार्यिकी विभाग पर आयोजित संगोष्ठी में भाग लेने के लिए यहां पहुंचे थे। बुलंदशहर के मूल निवासी डॉ. सिरोही ने आज के युवाओं को सीख भी दी। कहा कि आज साधनों की कमी नहीं है, सूचनाओं की कमी नहीं है, इनके उपयोग से नई राहें निकालें पर यह ध्यान रखें कि अपनी विरासत व सांस्कृतिक भावना को झटका न लगे। फिर मुखातिब हुए प्रोफेसर ए. हेमंत रंजन व प्रोफेसर जे.पी. श्रीवास्तव की ओर, ठठाकर हंसे, बोले अब बस।

निजता नीति | सेवा की शर्तें | आपके सुझाव
इस पृष्ठ की सामग्री जागरण प्रकाशन लिमिटेड द्वारा प्रदान की गई है
कॉपीराइट © 2007 याहू इंडिया प्राइवेट लिमिटेड सर्वाधिकार सुरक्षित
कॉपीराइट / IP नीति